माननीय वित्त मंत्री द्वारा मुख्य भाषण *

डॉ. डी. सुब्बाराव, गवर्नर, भारतीय रिजर्व बैंक, राजदूत रिचर्ड ए. बाउचर, आर्थिक सहयोग और विकास संगठन के उप महासचिव,देवियों और सज्जनों

2. *वित्तीय साक्षरता प्रदान करना* विषय पर इस कार्यशाला जिसकी मेजबानी भारतीय रिज़र्व बैंक और आर्थिक सहयोग और विकास संगठन द्वारा की जा रही है , का उद्घाटन करने के लिए यहां आने पर मुझे खुशी है। मैं भारतीय रिज़र्व बैंक को अपने प्लैटिनम जुबिली समारोह मनाने में एक घटक के रूप में इस महत्वपूर्ण आयोजन की सोच की सराहना करता हूं। आखिरकार वित्तीय साक्षरता और शिक्षा वित्तीय समावेशन, समावेशी वृद्धि और सतत समृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है जैसाकि वैश्विक रूप से इसे धीरे-धीरे पहचाना जा रहा है और स्वीकार किया जा रहा है। मैं विकासशील विश्व में वित्तीय समावेशन के संबंध में नवोन्मेषी रूप से आगे बढ़कर किए जाने वाले प्रयास तथा इस महत्वपूर्ण कार्यशाला को साझा रूप से आयोजित करने के लिए आर्थिक सहयोग और विकास संगठन की तारीफ करता हूं।

3. हालांकि भारत में वित्तीय नीतियां काफी लंबे समय से वित्तीय पैठ और पहुंच बढ़ाने के उद्देश्य से संचालित होती रही हैं। सार्वभौमिक समावेशन के लक्ष्य ने हमें भ्रम में डाले रखा। कृषि को क्रेडिट देना और ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को बचत सुविधाएं प्रदान करने के लिए सहकारी बैंकों के नेटवर्क, 1969 में बैंकों के राष्ट्रीयकरण, अनिवार्य लक्ष्य के साथ प्राथमिकताप्राप्त क्षेत्र को ऋण के एक व्यापक ढांचे का निर्माण भारतीय आबादी के एक बड़े वर्ग जिसकी संस्थागत वित्त तक पहुँच नहीं थी, की बचत और ऋण जरूरतों को पूरा करने के लिए राज्य और केंद्रीय बैंक प्रणित रणनीति के तत्व थे।

4. वित्तीय प्रणाली की पहुंच (आउटरीच) के विस्तार के लिए यह रणनीति मुख्य रूप से शाखा विस्तार, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों जैसे नए संस्थानों की स्थापना और आर्थिक

* 22-23 मार्च 2010 को बंगलूरू में भारतीय रिज़र्व बैंक और आर्थिक सहयोग और विकास संगठन की वित्तीय साक्षरता पर आयोजित कार्यशाला के अवसर पर माननीय वित्त मन्त्री श्री प्रणव मुखर्जी द्वारा दिया गया भाषण।

रूप से वंचित व्यापक वर्गों के लिए क्रेडिट का लक्ष्य निर्धारित करने पर निर्भर थी। निस्संदेह रूप से इसका बड़ा प्रभाव पड़ा और इसने बहुत से जीवन बदल दिए,विशेष रूप से ग्रामीण इलाकों में। हालांकि, इस चुनौती की भयावहता को देखते हुए इन प्रयासों के परिणाम अब तक मिश्रित रहे हैं।

5. अतः, हमें आज वित्तीय समावेशन के प्रति नए दृष्टिकोणों की जरूरत है जो हमारे अतीत के सबकों पर बनता है, लेकिन यह भी ज़रूरी है क्योंकि इस कार्यशाला का उप-विषय नए दृष्टिकोणों और साधनों के उपयोग की कोशिश का सुझाव देता है। महत्वपूर्ण बात, यह है कि इसके लिए नीतिनिर्धारकों, व्यवहारियों और अन्य हितधारकों को भी उसी प्रकार अपनी मानसिकता में बदलाव लाना होगा ताकि हमारी जनसंख्या के अब तक न पहुंचे और कम-पहुँच वाले क्षेत्रों का पता लगाया जाए और उन तक पहुँचने के प्रभावी तरीके ईज़ाद किए जाएं।

6. आबादी के एक बड़े हिस्से को वित्तीय सेवाओं तक अपेक्षाकृत अधिक पहुंच प्रदान करने के लिए किए जानेवाले किसी भी नीतिगत पहल अथवा प्रयास में वित्तीय शिक्षा और साक्षरता में मौजूदा जानकारी के अंतर के बीच एक सेतु स्थापित करने से जुड़ा मुद्दा अनिवार्यतः शामिल रहता है। अतः, पिछले दशक अथवा इतने ही समय में संपूर्ण विश्व के अनुसंधानकर्ताओं, विशेषकर विकसित देशों के अनुसंधानकर्ताओं ने यह अध्ययन करना और पता लगाना प्रारंभ कर दिया है कि क्या लोग वित्तीय निर्णय लेने के लिए पूरी तरह से समर्थ हैं। यद्यपि, विभिन्न देशों में शुरू किए गए ऐसे अनुसंधानों का फोकस चिंताओं और संदर्भ दोनों ही अर्थों में व्यापक रूप से भिन्न-भिन्न रहा है। इनमें से कुछ प्रयासों पर पलटकर नजर डालना सार्थक हो सकता है।

7. वित्तीय साक्षरता को बचत व्यवहार और पोर्टफोलियो पसंद से भी जोड़ा गया है। अक्सर वित्तीय ज्ञान को एक विशिष्ट प्रकार के लेनदेन से जोड़ा जाता है। उदाहरण के लिए, आर्थिक रूप से कम साक्षर लोगों में सेवानिवृत्ति के लिए योजना बनाने, धन जमा करने और बुद्धिमान निवेश निर्णय लेने की संभावनाएं कम पायी जाती हैं। वास्तव में, हाल ही के वैश्विक वित्तीय संकट ने यह सवाल खड़ा किया है कि क्या व्यक्तियों के वित्तीय ज्ञान की कमी उन्हें समायोज्य दर बंधक ऋण (एआरएम) लेने या क्रेडिट कार्ड ऋण लेने के लिए मज़बूर करती है जो उनके बस से बाहर होते हैं।

8. इस प्रकार अनुसंधान और वित्तीय साक्षरता संबंधी मौजूदा साहित्य ने लोगों की बचतों, उनके उधार लेने संबंधी निर्णय, सेवानिवृत्ति योजना या पोर्टफोलियो पसंद से संबंधित उनके वित्तीय फैसलों के साथ अर्थशास्त्र और वित्त ज्ञान के साथ संबंध स्थापित किया है। यह कहा गया है कि, विशेष रूप से विकसित अर्थव्यवस्थाओं के संदर्भ में कहा गया है कि युवा पर्याप्त बचत नहीं करते हैं और भविष्य के लिए निवेश की जरूरत को भी पूरी तरह से नहीं समझते हैं जबकि बहुत से बुज़ुर्ग गरीबी के इस दर्द को महसूस करते हैं। आज, वित्तीय क्षमता होना अधिक आवश्यक हो गया है क्योंकि वित्तीय बाजार और भी जटिल विकल्प प्रदान करते हैं। हालाँकि नीतियों द्वारा पहुँच उपलब्ध कराने की जरूरत है लेकिन बचत और भविष्य के लिए निवेश करने की जिम्मेदारी मूल रूप से व्यक्तियों पर ही रहती है।

9. इस पृष्ठभूमि में देखा जाए तो वित्तीय शिक्षा और साक्षरता हर परिदृश्य में अपरिहार्य हो जाती है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि सभी ओर नीति निर्माता क्रमिक रूप से इस ओर ध्यान दे रहे हैं और इसकी समस्याओं को दूर करने की दिशा में अपने प्रयासों को मोड़ रहे हैं।

10. इस संदर्भ में, वित्तीय शिक्षा के बारे में जागरूकता पैदा करने में एक सक्रिय पहल करने के लिए मुझे उल्लेख करना चाहिए और ओईसीडी को बधाई देनी चाहिए। कु छ

समय पहले, इसने 'वित्तीय साक्षरता में सुधार लाना' शीर्षक से वित्तीय शिक्षा पर एक प्रमुख अंतरराष्ट्रीय अध्ययन किया था जिसमें वित्तीय शिक्षा और जागरूकता में अच्छी प्रथाओं से संबंधित व्यावहारिक दिशा निर्देशों शामिल थे। ये दिशानिर्देश वित्तीय शिक्षा के क्षेत्र में सभी प्रमुख हिस्साधारकों, सरकारों, वित्तीय संस्थानों, नियोक्ताओं, श्रमिक संघों और उपभोक्ता समूहों की भूमिका को बढ़ावा देते हैं। इसके अलावा, एक ओर ये सरकारी और नियामक प्राधिकरणों द्वारा प्रदत्त सार्वजनिक सूचना और दूसरी ओर वित्तीय विश्लेषकों द्वारा प्रदत्त सूचना के बीच एक स्पष्ट अंतर प्रदान करते हैं।

11. भारत जैसे देश में, वास्तव में अधिक बुनियादी स्तर पर वित्तीय शिक्षा को बढ़ावा देना ज़ाहिर है विशेष रूप से गरीब और वित्तीय रूप से वंचित के लिए जोखिम कम करने और अवसर बढ़ाने के लिए शुरू की गई विकास नीतियों और कार्यक्रमों के संदर्भ में वित्तीय शिक्षा को बढ़ावा देना। हमारे देश में वित्तीय शिक्षा और साक्षरता दक्ष एवं समावेशी संप्रेषण व्यवस्थाओं के लिए हमारी व्यापक पहलें अनुपूरक के रूप में आदर्श रूप से सहायक होंगी। वित्तीय समावेशन के लिए किए जाने वाले हमारे समस्त प्रयास में वित्तीय शिक्षा और साक्षरता को समन्वित करने के लिए संभावनाएं तलाशने का मामला बनता है जिसके बारे में बढ़ा चढ़ाकर नहीं कहा जा सकता है।

12. हालांकि भारत के पास स्कूल स्तर पर अथवा सामान्य रूप में कोई भी राष्ट्रव्यापी रूप से तैयार किया गया वित्तीय शिक्षा कार्यक्रम नहीं है, लेकिन भारतीय रिज़र्व बैंक, विभिन्न स्व-विनियामक संस्थाएं, भारतीय बैंक संघ, वाणिज्य बैंक, भारतीय बैंकिंग आचार संहिता एवं मानक बोर्ड तथा एकदम हाल ही में भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड द्वारा की गई संस्था विशिष्ट पहलें वित्तीय साक्षरता और शिक्षा में मौजूद अंतर को भरने की कोशिश कर रही हैं।

13. मुझे यह जानकर अत्यंत खुशी है कि भारतीय रिज़र्व बैंक ने विभिन्न लक्ष्य समूहों को केंद्रीय बैंक और सामान्य बैंकिंग अवधारणाओं के संबंध में सूचना प्रसारित करने के उद्देश्य से एक ''वित्तीय साक्षरता परियोजना'' प्रारंभ की है। इस कार्य में एक महत्वपूर्ण साधन भारतीय रिज़र्व बैंक की वेबसाइट है जो 13 भाषाओं में उपलब्ध है। ''वित्तीय शिक्षा'' वेबसाइट लिंक सभी उम्र के बच्चों के लिए बैंकिंग, वित्त और केंद्रीय बैंकिंग की आधारभूत जानकारी प्रदान करती है। कॉमिक बुक्स पहलों की शृंखला में रिज़र्व बैंक ने खेल-खेल में सीखना तथा इसे रोचक बनाने के उद्देश्य से बैंकिंग, वित्त और केंद्रीय बैंकिंग की जटिलताओं को सरल बनाने की कोशिश की है। भारतीय रिज़र्व बैंक भी सभी बैंकों द्वारा अपनी फ्रंट लाइन शाखाओं में विश्वसनीय वित्तीय साक्षरता और ऋण विषयक परामर्श देना प्रारंभ करने के कार्य में उनके साथ शामिल हो गया है।

14. वास्तव में, वित्तीय शिक्षा और साक्षरता को मोटे तौर पर वित्तीय बाजार के उत्पादन विशेष रूप से सुविचारित निर्णय लेने में होनेवाले फायदों और जोखिमों से परिचित होने और उन्हें समझने की क्षमता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। इस दृष्टिकोण से देखने पर वित्तीय साक्षरता प्राथमिक स्तर पर व्यक्तिगत रूप से वित्तीय शिक्षा से जुड़ती है ताकि लोग समग्र रूप से अपनी बेहतरी के लिए कारगर कदम उठा सकें और उन मामलों में संकट से बच सकें जोकि वित्तीय हैं। क्योंकि वित्तीय शिक्षा की पहुंच बढ़ाने के लिए किया जानेवाला कोई भी प्रयास आधारभूत स्तर पर ही शुरू होना चाहिए। यह पहल जो भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा कर्नाटक में स्कूली बच्चों के लिए राज्य सरकार के सहयोग से प्रारंभ की जा रही है, स्वागतयोग्य है और वास्तव में फल देनेवाली है।

15. जैसेकि मैंने यहां 1991 में वैश्वीकरण और वित्तीय क्षेत्र के सुधारों को प्रारंभ किए जाने की प्रक्रिया के

अनुसरण में कुछ समय पहले चर्चा की थी, भारत में आर्थिक और वित्तीय परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण बदलाव आया है। इस प्रक्रिया में वृद्धि के नए प्रेरकों और स्रोतों के साथ अर्थव्यवस्था और भी ज्यादा विविधीकृत हो गई है। इन परिवर्तनों के साथ-साथ हमने वित्तीय क्षेत्र के आधुनिकीकरण को भी देखा है जो अर्थव्यवस्था की नई आवश्यकताओं को पूरी करने के लिए धीरे-धीरे और भी ज्यादा विविधीकृत हो गया है।

16. वित्तीय क्षेत्र ने भी क्रमिक रूप से प्रौद्योगिकी में हो रही खोजों पर निर्भर करना प्रारंभ कर दिया है जिससे वित्तीय कारोबार किए जाने के तरीके में काफी परिवर्तन आ गया है। चूंकि वित्तीय बाजारों की गतिविधियां वित्तीय उत्पादों और सेवाओं की काफी व्यापक विविधता संभव बनाती है। अतः, ग्राहकों को जहां एक ओर अपने वित्त के प्रबंधन में बहुआयामी पसंदें और विकल्प मिल रहे हैं वहीं दूसरी ओर उनके सामने ढेर सारी जोखिमें भी आ गई हैं।

17. इस समय सूचना प्रौद्योगिकी में हो रही नयी-नयी खोजों, विशेष रूप से इसे अपनाने में हो रही अभूतपूर्व वृद्धि और इंटरनेट के उपयोग ने सूचना प्राप्त करने और उसे प्रोसेस करने के साथ-साथ नौकरी ढूंढ़ने की लागतें भी घटा दी हैं। इसके बदले में परिवार के आकार और व्यय के स्वरूप से जुड़े निहितार्थों के साथ नौकरी बदलना काफी बढ़ा है। इस बदले हुए सामाजिक और आर्थिक परिदृश्य में वित्तीय योजना बनाने की क्षमता होना लगभग अनिवार्य हो गया है क्योंकि केवल यही ज्ञान और जागरूकता परिवारों को अपने अल्पकालीन दायित्वों को पूरा करने तथा दीर्घावधि वाली वित्तीय बेहतरी से अधिकाधिक लाभ उठाने की शक्ति प्रदान करती है।

18. अब आपको विकासगत रणनीति के उस देशगत संदर्भ की ओर वापस ले जाता हूं जिसका मैंने पहले उल्लेख किया था। जैसा कि आप में से अधिकांश लोग इस बात से परिचित हैं कि भारत का ढांचा विविधता से भरा हुआ एवं बहुभाषी है। हमारे देश का क्षेत्रीय स्वरूप विविधता से भरा हुआ है और विभिन्न क्षेत्रों के बीच अधिकांश लोग एक विशिष्ट रूप से अपनी स्थानीय भाषाओं में पूरी तरह से दक्ष हैं। फिर भी, विभिन्न राज्यों के बीच साक्षरता के स्तर में व्यापक अंतर मौजूद है। किसी राज्य के भीतर भी वहां के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच उल्लेखनीय अंतर है तथा क्षेत्रों के बीच बैंकिंग की पहुंच में एक ध्यान देने योग्य भिन्नता है।

19. कुल मिलाकर, हमारे देश में ये अद्वितीय परिस्थितियां सार्वजनिक नीति संस्थानों, जिसमें सरकार और भारतीय रिज़र्व बैंक शामिल हैं, के लिए वित्तीय साक्षरता और शिक्षा, जिसमें क्षेत्रीय विविधताओं का विधिवत समावेश हो, प्रदान करने हेतु उचित व्यवस्था बनाने के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण और चुनौती भरी भूमिका प्रस्तुत करती हैं।

20. विकास के अर्थशास्त्र के मुहावरे और रूपक समय-समय पर बदलते रहते हैं। आज, हमारे जैसे देश में वित्तीय क्षेत्र की नयी पहलें - चाहे वे सरकार और केंद्रीय बैंक की त्वरित और नवोन्मेषी नीतिगत प्रतिक्रियाएं के रूप में हों या कार्यान्वयन क्षमता और विविध खिलाड़ियों के नवोन्मेष विचारों के रूप में हों - को वित्तीय समावेशन और वित्तीय साक्षरता दोनों ही रूपों में स्पष्ट रूप से प्राथमिकता देने की जरूरत है। मुझे यकीन है कि यह कार्यशाला नए-नए विचार और ताजा अंतर्दृष्टि प्रदान करेगी और वित्तीय साक्षरता और शिक्षा के क्षेत्र में पूरे देश की सफलता की कहानियों, अनुभवों और रणनीतियों के लिए दुहराने योग्य एक मंच प्रदान करेगी।

21. इन शब्दों के साथ, मैं अब मैं इस कार्यशाला का खुशी-खुशी उद्घाटन करता हूँ। इस कार्यशाला की सफलता के साथ-साथ वित्तीय साक्षरता को बढ़ावा देने में आपके व्यक्तिगत और सामूहिक प्रयासों के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।